७.लघुकथाएँ

(पठनार्थ)

– *ज्योति जैन*

दावा

बहस चल रही थी । सभी अपने-अपने देशभक्त होने का दावा पेश कर रहे थे ।

शिक्षक का कहना था, ''हम नौनिहालों को शिक्षित करते हैं, अतः यही देश की बड़ी सेवा है ।''

चिकित्सक का कहना था, ''नहीं ! हम ही देशवासियों की जान बचाते हैं, अतः यह प्रमाणपत्र तो हमें ही मिलना चाहिए ।''

बड़े-बड़े कंस्ट्रक्शन करने वाले इंजीनियरों ने भी अपना दावा जताया, तो बिजनेसमैन, किसानों ने भी देश की आर्थिक उन्नति में अपना योगदान बताते हुए स्वयं का पक्ष प्रस्तुत किया ।

तब खादीधारी नेता आगे आए, ''हमारे बिना देश का विकास संभव है क्या ? सबसे बड़े देशभक्त तो हम ही हैं ।''

यह सुन सब धीरे-धीरे खिसकने लगे ।

तभी आवाज आई, ''अरे लालसिंह ! तुम अपनी बात नहीं रखोगे ?''

''मैं तो क्या कहूँ ?'' रिटायर्ड फौजी बोला, ''किस बिना पर कुछ कहूँ ! मेरे पास तो कुछ नहीं, तीनों बेटे पहले ही फौज में शहीद हो गए हैं ।''

× × × ×

परिचय

जन्म : २७ अगस्त १९६४ मंदसौर (म.प्र.)। **परिचय :** मुख्यतः कथा साहित्य एवं समीक्षा के क्षेत्र में लेखन किया है । प्रमुख पत्र पत्रिकाओं में आपकी रचनाएँ प्रकाशित हुई हैं ।

प्रमुख कृतियाँ : जल तरंग (लघुकथा संग्रह) भोरवेला (कहानी संग्रह)

गद्य संबंधी

लघुकथा : लघुकथा किसी बहुत बड़े परिदृश्य में से एक विशेष क्षण/प्रसंग को प्रस्तुत करने का चातुर्य है ।

प्रस्तुत 'दावा' लघुकथा में जैन जी ने प्रच्छन्न रूप से सैनिकों के योगदान को देश के लिए सर्वोपरि बताया है । 'नीम का पेड़' लघुकथा में पर्यावरण के साथ-साथ बड़ों की भावनाओं का आदर करना चाहिए, यह बताया है ।

संभाषणीय

'पर्यावरण संवर्धन' संबंधी कोई पथनाट्य प्रस्तुत कीजिए ।

नीम का पेड़

बाउंड्रीवाल में बाधक बन रहा नीम का पेड़ घर में सबको खटक रहा था । आखिर कटवाने का ही फैसला लिया गया । काका साब उदास हो चले । राजेश समझा रहा था, '' कार रखने में दिक्कत आएगी, पेड़ तो कटवाना ही पड़ेगा न !''

काका साब ने हथियार डालने के स्वर में 'ठीक है' कहकर चुप्पी साध ली । हमेशा अपना रोब जताने वाले काका साब की चुप्पी राजेश को कुछ खल रही थी । अपने पिता के चेहरे को देखते-देखते अचानक ही राजेश को उसमें नीम के तने की लकीरें नजर आने लगीं ।

''हैप्पी फादर्स डे पापा...'' सात साल के प्रतीक की आवाज ने उसके विचारों को विराम दिया ।

''पापा, आज फादर्स डे है और मैं आपके लिए ये ....गिफ्ट लाया हूँ ।'' कहते-कहते प्रतीक ने अपने हाथों में थैली में लाया पौधा आगे कर दिया ।

''पापा, इसे वहाँ लगाएँगे जहाँ इसे कोई काटे नहीं ।''

''हाँ बेटा, इसे भी लगाएँगे और बाहरवाला नीम भी नहीं कटेगा । गैरेज के लिए कुछ और व्यवस्था देखते हैं ।'' फैसले-वाले अंदाज में कहते हुए राजेश ने कनखियों से काका को देखा।

बाहर सर्र... से हवा चली और बूढ़ा नीम मानो नए जोश से झूमकर लहरा उठा ।

शब्द संसार

नौनिहाल (पुं.सं.) = होनहार बच्चे
चिकित्सक (पुं.सं.) = चिकित्सा करने वाला वैद्य
योगदान (पुं.सं.) = किसी काम में साथ देना, सहयोग

मुहावरे

पेश करना = प्रस्तुत करना
दावा जताना = अधिकार जताना

लेखनीय

'राष्ट्रीय रक्षा अकादमी' की जानकारी प्राप्त करके लिखिए ।

श्रवणीय

प्राकृतिक सौंदर्य पर आधारित कोई कविता सुनिए और सुनाइए ।

पठनीय

वृंदावनलाल वर्मा के किसी उपन्यास का एक अंश पढ़कर सुनाइए ।

रचना बोध

.....
.....
.....